Буряад-Монголын Үнэн

Буряад-Монгол ЗКП (б.) ОХК-ийн Бүрэлсүдлийн а Бүрэлсүдлийн Ардын Депутатнарай Хэлэмжэлэй Газета выходит 2 раза в неделю

Gazar byrliin politaarmund, negedegteil

Buriaad-Mongoliin

YNEN

№ 59 (439)

год издания VIII

Пятница 21 Ноября 1930 г.

Хэрэгтэй газар, сельсоветтэй

Ардын Депутатнарай Хэлэмжэлэй Газетэ Буряад-Монголой Автономитэй Хэсэгэй Бүрэлсүдлийнгээ Центральнай Комитетэй, Буряад-Монголой Ардын Депутатнарай Хэлэмжэлэй Центральнай Исполнительнай Комитетэй, Буряад-Монголой Ардын Хүдэлмэрилэгшэдэй Профсоюзнуудай Бүрэлдэхэ Зүтгэлтэнэй Хэлэмжэлэй Центральнай Комитетэй гаргадаг.

Редактор Ц. Цыдыпов, Ответственный секретарь Ц. Цыдыпов, Техническай редактор Ц. Цыдыпов, Корректор Ц. Цыдыпов, Адрес редакции: Верхнеудинск, Ленин гудамж, 49, Телефон 2-й, 3-й, 4-й, 5-й, 6-й, 7-й, 8-й, 9-й, 10-й, 11-й, 12-й, 13-й, 14-й, 15-й, 16-й, 17-й, 18-й, 19-й, 20-й, 21-й, 22-й, 23-й, 24-й, 25-й, 26-й, 27-й, 28-й, 29-й, 30-й, 31-й, 32-й, 33-й, 34-й, 35-й, 36-й, 37-й, 38-й, 39-й, 40-й, 41-й, 42-й, 43-й, 44-й, 45-й, 46-й, 47-й, 48-й, 49-й, 50-й, 51-й, 52-й, 53-й, 54-й, 55-й, 56-й, 57-й, 58-й, 59-й, 60-й, 61-й, 62-й, 63-й, 64-й, 65-й, 66-й, 67-й, 68-й, 69-й, 70-й, 71-й, 72-й, 73-й, 74-й, 75-й, 76-й, 77-й, 78-й, 79-й, 80-й, 81-й, 82-й, 83-й, 84-й, 85-й, 86-й, 87-й, 88-й, 89-й, 90-й, 91-й, 92-й, 93-й, 94-й, 95-й, 96-й, 97-й, 98-й, 99-й, 100-й, 101-й, 102-й, 103-й, 104-й, 105-й, 106-й, 107-й, 108-й, 109-й, 110-й, 111-й, 112-й, 113-й, 114-й, 115-й, 116-й, 117-й, 118-й, 119-й, 120-й, 121-й, 122-й, 123-й, 124-й, 125-й, 126-й, 127-й, 128-й, 129-й, 130-й, 131-й, 132-й, 133-й, 134-й, 135-й, 136-й, 137-й, 138-й, 139-й, 140-й, 141-й, 142-й, 143-й, 144-й, 145-й, 146-й, 147-й, 148-й, 149-й, 150-й, 151-й, 152-й, 153-й, 154-й, 155-й, 156-й, 157-й, 158-й, 159-й, 160-й, 161-й, 162-й, 163-й, 164-й, 165-й, 166-й, 167-й, 168-й, 169-й, 170-й, 171-й, 172-й, 173-й, 174-й, 175-й, 176-й, 177-й, 178-й, 179-й, 180-й, 181-й, 182-й, 183-й, 184-й, 185-й, 186-й, 187-й, 188-й, 189-й, 190-й, 191-й, 192-й, 193-й, 194-й, 195-й, 196-й, 197-й, 198-й, 199-й, 200-й, 201-й, 202-й, 203-й, 204-й, 205-й, 206-й, 207-й, 208-й, 209-й, 210-й, 211-й, 212-й, 213-й, 214-й, 215-й, 216-й, 217-й, 218-й, 219-й, 220-й, 221-й, 222-й, 223-й, 224-й, 225-й, 226-й, 227-й, 228-й, 229-й, 230-й, 231-й, 232-й, 233-й, 234-й, 235-й, 236-й, 237-й, 238-й, 239-й, 240-й, 241-й, 242-й, 243-й, 244-й, 245-й, 246-й, 247-й, 248-й, 249-й, 250-й, 251-й, 252-й, 253-й, 254-й, 255-й, 256-й, 257-й, 258-й, 259-й, 260-й, 261-й, 262-й, 263-й, 264-й, 265-й, 266-й, 267-й, 268-й, 269-й, 270-й, 271-й, 272-й, 273-й, 274-й, 275-й, 276-й, 277-й, 278-й, 279-й, 280-й, 281-й, 282-й, 283-й, 284-й, 285-й, 286-й, 287-й, 288-й, 289-й, 290-й, 291-й, 292-й, 293-й, 294-й, 295-й, 296-й, 297-й, 298-й, 299-й, 300-й, 301-й, 302-й, 303-й, 304-й, 305-й, 306-й, 307-й, 308-й, 309-й, 310-й, 311-й, 312-й, 313-й, 314-й, 315-й, 316-й, 317-й, 318-й, 319-й, 320-й, 321-й, 322-й, 323-й, 324-й, 325-й, 326-й, 327-й, 328-й, 329-й, 330-й, 331-й, 332-й, 333-й, 334-й, 335-й, 336-й, 337-й, 338-й, 339-й, 340-й, 341-й, 342-й, 343-й, 344-й, 345-й, 346-й, 347-й, 348-й, 349-й, 350-й, 351-й, 352-й, 353-й, 354-й, 355-й, 356-й, 357-й, 358-й, 359-й, 360-й, 361-й, 362-й, 363-й, 364-й, 365-й, 366-й, 367-й, 368-й, 369-й, 370-й, 371-й, 372-й, 373-й, 374-й, 375-й, 376-й, 377-й, 378-й, 379-й, 380-й, 381-й, 382-й, 383-й, 384-й, 385-й, 386-й, 387-й, 388-й, 389-й, 390-й, 391-й, 392-й, 393-й, 394-й, 395-й, 396-й, 397-й, 398-й, 399-й, 400-й, 401-й, 402-й, 403-й, 404-й, 405-й, 406-й, 407-й, 408-й, 409-й, 410-й, 411-й, 412-й, 413-й, 414-й, 415-й, 416-й, 417-й, 418-й, 419-й, 420-й, 421-й, 422-й, 423-й, 424-й, 425-й, 426-й, 427-й, 428-й, 429-й, 430-й, 431-й, 432-й, 433-й, 434-й, 435-й, 436-й, 437-й, 438-й, 439-й, 440-й, 441-й, 442-й, 443-й, 444-й, 445-й, 446-й, 447-й, 448-й, 449-й, 450-й, 451-й, 452-й, 453-й, 454-й, 455-й, 456-й, 457-й, 458-й, 459-й, 460-й, 461-й, 462-й, 463-й, 464-й, 465-й, 466-й, 467-й, 468-й, 469-й, 470-й, 471-й, 472-й, 473-й, 474-й, 475-й, 476-й, 477-й, 478-й, 479-й, 480-й, 481-й, 482-й, 483-й, 484-й, 485-й, 486-й, 487-й, 488-й, 489-й, 490-й, 491-й, 492-й, 493-й, 494-й, 495-й, 496-й, 497-й, 498-й, 499-й, 500-й, 501-й, 502-й, 503-й, 504-й, 505-й, 506-й, 507-й, 508-й, 509-й, 510-й, 511-й, 512-й, 513-й, 514-й, 515-й, 516-й, 517-й, 518-й, 519-й, 520-й, 521-й, 522-й, 523-й, 524-й, 525-й, 526-й, 527-й, 528-й, 529-й, 530-й, 531-й, 532-й, 533-й, 534-й, 535-й, 536-й, 537-й, 538-й, 539-й, 540-й, 541-й, 542-й, 543-й, 544-й, 545-й, 546-й, 547-й, 548-й, 549-й, 550-й, 551-й, 552-й, 553-й, 554-й, 555-й, 556-й, 557-й, 558-й, 559-й, 560-й, 561-й, 562-й, 563-й, 564-й, 565-й, 566-й, 567-й, 568-й, 569-й, 570-й, 571-й, 572-й, 573-й, 574-й, 575-й, 576-й, 577-й, 578-й, 579-й, 580-й, 581-й, 582-й, 583-й, 584-й, 585-й, 586-й, 587-й, 588-й, 589-й, 590-й, 591-й, 592-й, 593-й, 594-й, 595-й, 596-й, 597-й, 598-й, 599-й, 600-й, 601-й, 602-й, 603-й, 604-й, 605-й, 606-й, 607-й, 608-й, 609-й, 610-й, 611-й, 612-й, 613-й, 614-й, 615-й, 616-й, 617-й, 618-й, 619-й, 620-й, 621-й, 622-й, 623-й, 624-й, 625-й, 626-й, 627-й, 628-й, 629-й, 630-й, 631-й, 632-й, 633-й, 634-й, 635-й, 636-й, 637-й, 638-й, 639-й, 640-й, 641-й, 642-й, 643-й, 644-й, 645-й, 646-й, 647-й, 648-й, 649-й, 650-й, 651-й, 652-й, 653-й, 654-й, 655-й, 656-й, 657-й, 658-й, 659-й, 660-й, 661-й, 662-й, 663-й, 664-й, 665-й, 666-й, 667-й, 668-й, 669-й, 670-й, 671-й, 672-й, 673-й, 674-й, 675-й, 676-й, 677-й, 678-й, 679-й, 680-й, 681-й, 682-й, 683-й, 684-й, 685-й, 686-й, 687-й, 688-й, 689-й, 690-й, 691-й, 692-й, 693-й, 694-й, 695-й, 696-й, 697-й, 698-й, 699-й, 700-й, 701-й, 702-й, 703-й, 704-й, 705-й, 706-й, 707-й, 708-й, 709-й, 710-й, 711-й, 712-й, 713-й, 714-й, 715-й, 716-й, 717-й, 718-й, 719-й, 720-й, 721-й, 722-й, 723-й, 724-й, 725-й, 726-й, 727-й, 728-й, 729-й, 730-й, 731-й, 732-й, 733-й, 734-й, 735-й, 736-й, 737-й, 738-й, 739-й, 740-й, 741-й, 742-й, 743-й, 744-й, 745-й, 746-й, 747-й, 748-й, 749-й, 750-й, 751-й, 752-й, 753-й, 754-й, 755-й, 756-й, 757-й, 758-й, 759-й, 760-й, 761-й, 762-й, 763-й, 764-й, 765-й, 766-й, 767-й, 768-й, 769-й, 770-й, 771-й, 772-й, 773-й, 774-й, 775-й, 776-й, 777-й, 778-й, 779-й, 780-й, 781-й, 782-й, 783-й, 784-й, 785-й, 786-й, 787-й, 788-й, 789-й, 790-й, 791-й, 792-й, 793-й, 794-й, 795-й, 796-й, 797-й, 798-й, 799-й, 800-й, 801-й, 802-й, 803-й, 804-й, 805-й, 806-й, 807-й, 808-й, 809-й, 810-й, 811-й, 812-й, 813-й, 814-й, 815-й, 816-й, 817-й, 818-й, 819-й, 820-й, 821-й, 822-й, 823-й, 824-й, 825-й, 826-й, 827-й, 828-й, 829-й, 830-й, 831-й, 832-й, 833-й, 834-й, 835-й, 836-й, 837-й, 838-й, 839-й, 840-й, 841-й, 842-й, 843-й, 844-й, 845-й, 846-й, 847-й, 848-й, 849-й, 850-й, 851-й, 852-й, 853-й, 854-й, 855-й, 856-й, 857-й, 858-й, 859-й, 860-й, 861-й, 862-й, 863-й, 864-й, 865-й, 866-й, 867-й, 868-й, 869-й, 870-й, 871-й, 872-й, 873-й, 874-й, 875-й, 876-й, 877-й, 878-й, 879-й, 880-й, 881-й, 882-й, 883-й, 884-й, 885-й, 886-й, 887-й, 888-й, 889-й, 890-й, 891-й, 892-й, 893-й, 894-й, 895-й, 896-й, 897-й, 898-й, 899-й, 900-й, 901-й, 902-й, 903-й, 904-й, 905-й, 906-й, 907-й, 908-й, 909-й, 910-й, 911-й, 912-й, 913-й, 914-й, 915-й, 916-й, 917-й, 918-й, 919-й, 920-й, 921-й, 922-й, 923-й, 924-й, 925-й, 926-й, 927-й, 928-й, 929-й, 930-й, 931-й, 932-й, 933-й, 934-й, 935-й, 936-й, 937-й, 938-й, 939-й, 940-й, 941-й, 942-й, 943-й, 944-й, 945-й, 946-й, 947-й, 948-й, 949-й, 950-й, 951-й, 952-й, 953-й, 954-й, 955-й, 956-й, 957-й, 958-й, 959-й, 960-й, 961-й, 962-й, 963-й, 964-й, 965-й, 966-й, 967-й, 968-й, 969-й, 970-й, 971-й, 972-й, 973-й, 974-й, 975-й, 976-й, 977-й, 978-й, 979-й, 980-й, 981-й, 982-й, 983-й, 984-й, 985-й, 986-й, 987-й, 988-й, 989-й, 990-й, 991-й, 992-й, 993-й, 994-й, 995-й, 996-й, 997-й, 998-й, 999-й, 1000-й

Ардын Депутатнарай Хэлэмжэлэй Бүрэлдэхэ Зүтгэлтэнэй Хэлэмжэлэй Президиумайн Тогтоолой Тухай

Президиумайн Президиумайн Президиумайн

ہمارے ہاں ڈاک ۔ ریلوے کے محکمہ ڈاک کو ہمارے نمائندے کی طرف سے مبارکباد

«ہمارے ہاں ڈاک» کے ایڈیٹر کی طرف سے ریلوے کے محکمہ ڈاک کو ۱۵ مارچ کو ریلوے کے ہفتۂ ڈاک کی مبارکباد

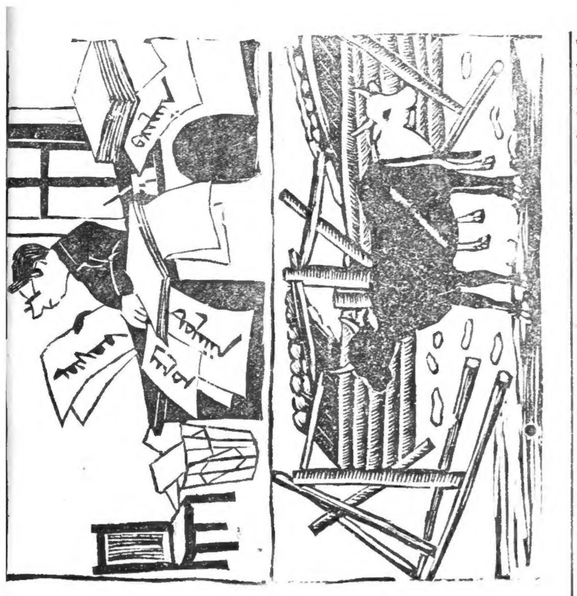

«ہمارے ہاں ڈاک» کے ایڈیٹر کی طرف سے ریلوے کے محکمہ ڈاک کو مبارکباد

ریلوے کے محکمہ ڈاک کو ہمارے نمائندے کی طرف سے مبارکباد

ریلوے کے محکمہ ڈاک کو ہمارے نمائندے کی طرف سے مبارکباد

ریلوے کے محکمہ ڈاک کو ہمارے نمائندے کی طرف سے مبارکباد

رستوران‌های قدیمی و خاطره‌هایی که هنوز زنده‌اند

گفت‌وگو با آقای منوچهر دلاوری، صاحب رستوران دلاوری که از سال ۱۳۳۲ تا امروز در خیابان ناصرخسرو پابرجاست و هنوز همان غرفه‌ی کوچک را نگه داشته است.

«ما هیچ وقت نخواستیم بزرگ شویم. فقط نخواستیم تعطیل شویم.» آقای منوچهر دلاوری این جمله را وسط گفت‌وگو می‌گوید و بعد سکوت می‌کند. سکوتی که نه از سر خستگی است و نه از سر فراموشی. انگار دارد به روزهایی فکر می‌کند که در آن روزها، رستوران‌ها یا بزرگ می‌شدند یا تعطیل می‌شدند، و هیچ راه سومی وجود نداشت.

رستوران دلاوری در سال ۱۳۳۲ با سرمایه‌ی شخصی پدر آقای دلاوری و با کمک دو برادرش باز شد. در آن زمان ناصرخسرو هنوز خیابان اصلی بازار بود و مغازه‌ها تا نیمه‌های شب روشن بود. غرفه‌ی دلاوری ۱۲ صندلی داشت و منوی آن روی یک تخته‌سیاه با گچ نوشته می‌شد. امروز همان تخته‌سیاه هنوز پشت صندوق آویزان است، با همان خط دست‌نویس و همان اشتباه‌های املایی که آقای دلاوری عمداً پاک نمی‌کند.

«مشتری‌ها می‌آیند و می‌گویند ما را از بچگی می‌شناسند. راست می‌گویند. من هم بچه‌ی همین محله بودم. پدرم شب‌ها می‌آمد کمک می‌کرد و روزها مدرسه می‌رفتم. یادم هست یک زمستان برف آمد و هیچ تاکسی نیامد و پدرم با دمپایی آمد سر کار. این را هیچ جا ننوشته‌ام، اما شما ننویسید.»

منوی رستوران دلاوری شامل ۱۴ غذا است و هیچ کدام از سه تا آشپز عوض نشده است. آقای دلاوری می‌گوید اگر یکی از آشپزها بمیرد، یا اگر برنج گران شود که شده است، یا اگر مشتری‌ها بگویند طعم فرق کرده که گفته‌اند، باز هم منو عوض نمی‌شود. دلیلش را نمی‌گوید. فقط می‌گوید «این غذا درست است».

۳۱ سال پیش، در همین غرفه

در سال ۱۳۶۲، وقتی برادر کوچک‌تر آقای دلاوری از کار کناره گرفت، آقای منوچهر تنها ماند. در آن سال فروش روزانه به ۴۰ بشقاب رسیده بود. امروز به ۶۰ بشقاب می‌رسد. تفاوت زیاد نیست. تفاوت در این است که امروز دو نفر کمک می‌کنند و در آن روزها یک نفر تنها بود و شب‌ها تا ۱۰ می‌ماند.

«زن نداشتم. بچه نداشتم. رستوران را زن و بچه‌ام حساب می‌کردم.» این را بدون تأسف می‌گوید. نه تأسف، نه افتخار. انگار دارد یک واقعیت را می‌گوید مثل این‌که بگوید هوا سرد است. در آن سال‌ها یک دستیار داشت به نام رحیم که ۱۷ سال کنار او ماند و حالا خودش صاحب یک رستوران دیگر است در قلهک. آقای دلاوری می‌گوید رحیم بهتر از او آشپز است و این را بدون حسادت می‌گوید.

قیمت‌ها در سال ۱۳۹۸ برای آخرین بار تغییر کرد. یک بشقاب غذا ۳۱۰٬۰۰۰ تومان است. آقای دلاوری می‌گوید اگر تورم ادامه پیدا کند، قیمت را ۳۵۰ هزار می‌کند و دیگر تغییر نمی‌دهد تا سال بعد. دلیلش این است که مشتری‌ها از تغییر قیمت خسته‌اند و او هم از حساب کردن خسته است. «من حساب‌دار نیستم. یک عدد می‌نویسم و می‌روم سراغ کار.»

آشپزخانه‌ای که هنوز همان است

آشپزخانه‌ی رستوران دلاوری ۴ متر در ۳ متر است. یک اجاق گاز، یک سرخ‌کن، یک یخچال که در تابستان خراب می‌شود و آقای دلاوری یخ را از بقال سر کوچه می‌خرد. هیچ سیستم رایانه‌ای وجود ندارد. صورت‌حساب‌ها روی کاغذ نوشته می‌شود و آقای دلاوری جمع‌ها را در ذهن خود می‌زند. «ماشین‌حساب دارم، اما روشنش نمی‌کنم. چشمم بهتر از باتری است.»

بهداشت رستوران در سال ۱۳۹۱ و ۱۳۹۴ دو بار بازرسی شد و هر دو بار بدون تذکر گذشت. آقای دلاوری می‌گوید بازرس‌ها هم مشتری‌اند و می‌دانند چه می‌خورند. این را نه با افتخار می‌گوید و نه با گلایه. انگار دارد یک قانون فیزیک را می‌گوید. در همین محله، دو رستوران دیگر هم هست که آقای دلاوری غذایشان را می‌خورد و می‌گوید «آن یکی روغن زیاد می‌ریزد، این یکی نمک زیاد می‌گذارد، اما هر دو هنوز سرپا هستند».

آخرین صندلی، آخرین دلیل

«تا زمانی که مشتری بیاید، در باز است.» این جمله را آقای دلاوری در پاسخ به پرسش درباره‌ی زمان بازنشستگی می‌گوید. نه سال دارد و هنوز هر روز ساعت ۷ صبح می‌آید و ساعت ۶ بعدازظهر می‌رود. پسرش در خارج است و دخترش معلم است و هیچ کدام از آنها نمی‌خواهند رستوران را بگیرند. این هم یک واقعیت است که آقای دلاوری بدون تأسف می‌گوید.

رستوران دلاوری ۲۰ صندلی دارد. آخرین صندلی روی پله‌ی ورودی است و آقای دلاوری می‌گوید اگر کسی بیاید و بگوید جا ندارم، می‌گوید «صبر کن، یکی می‌رود». این جمله را نه برای مشتری، بلکه برای خودش می‌گوید. و تا الان همیشه یکی رفته است.

رستوران دلاوری در ورودی بازار بزرگ تهران، سه نسل است که همان منو، همان آشپز و همان صندلی آخر را نگه داشته است

صاحبش می‌گوید تا زمانی که مشتری بیاید، در باز است و هنوز هیچ تابلوی نئونی ندارد.

«ما هیچ وقت نخواستیم بزرگ شویم. فقط نخواستیم تعطیل شویم.» آقای منوچهر دلاوری این جمله را وسط گفت‌وگو می‌گوید و بعد سکوت می‌کند. سکوتی که نه از خستگی است و نه از فراموشی. انگار دارد به روزهایی فکر می‌کند که در آن روزها، رستوران‌ها یا بزرگ می‌شدند یا تعطیل می‌شدند، و هیچ راه سومی وجود نداشت.

رستوران دلاوری در سال ۱۳۳۲ با سرمایه‌ی شخصی پدر آقای دلاوری و با کمک دو برادرش باز شد. در آن زمان ناصرخسرو هنوز خیابان اصلی بازار بود و مغازه‌ها تا نیمه‌های شب روشن بود. غرفه‌ی دلاوری ۱۲ صندلی داشت و منوی آن روی یک تخته‌سیاه با گچ نوشته می‌شد. امروز همان تخته‌سیاه هنوز پشت صندوق آویزان است، با همان خط دست‌نویس و همان اشتباه‌های املایی که آقای دلاوری عمداً پاک نمی‌کند.

«مشتری‌ها می‌آیند و می‌گویند ما را از بچگی می‌شناسند. راست می‌گویند. من هم بچه‌ی همین محله بودم. پدرم شب‌ها می‌آمد کمک می‌کرد و روزها مدرسه می‌رفتم. یادم هست یک زمستان برف آمد و هیچ تاکسی نیامد و پدرم با دمپایی آمد سر کار. این را هیچ جا ننوشته‌ام، اما شما ننویسید.»

منوی رستوران دلاوری شامل ۱۴ غذا است و هیچ کدام از سه تا آشپز عوض نشده است. آقای دلاوری می‌گوید اگر یکی از آشپزها بمیرد، یا اگر برنج گران شود که شده است، یا اگر مشتری‌ها بگویند طعم فرق کرده که گفته‌اند، باز هم منو عوض نمی‌شود. دلیلش را نمی‌گوید. فقط می‌گوید «این غذا درست است».

۳۱ سال پیش، در همین غرفه

در سال ۱۳۶۲، وقتی برادر کوچک‌تر آقای دلاوری از کار کناره گرفت، آقای منوچهر تنها ماند. در آن سال فروش روزانه به ۴۰ بشقاب رسیده بود. امروز به ۶۰ بشقاب می‌رسد. تفاوت زیاد نیست. تفاوت در این است که امروز دو نفر کمک می‌کنند و در آن روزها یک نفر تنها بود و شب‌ها تا ۱۰ می‌ماند.

«زن نداشتم. بچه نداشتم. رستوران را زن و بچه‌ام حساب می‌کردم.» این را بدون تأسف می‌گوید. نه تأسف، نه افتخار. انگار دارد یک واقعیت را می‌گوید مثل این‌که بگوید هوا سرد است. در آن سال‌ها یک دستیار داشت به نام رحیم که ۱۷ سال کنار او ماند و حالا خودش صاحب یک رستوران دیگر است در قلهک. آقای دلاوری می‌گوید رحیم بهتر از او آشپز است و این را بدون حسادت می‌گوید.

قیمت‌ها در سال ۱۳۹۸ برای آخرین بار تغییر کرد. یک بشقاب غذا ۳۱۰٬۰۰۰ تومان است. آقای دلاوری می‌گوید اگر تورم ادامه پیدا کند، قیمت را ۳۵۰ هزار می‌کند و دیگر تغییر نمی‌دهد تا سال بعد. دلیلش این است که مشتری‌ها از تغییر قیمت خسته‌اند و او هم از حساب کردن خسته است. «من حساب‌دار نیستم. یک عدد می‌نویسم و می‌روم سراغ کار.»

آشپزخانه‌ای که هنوز همان است

آشپزخانه‌ی رستوران دلاوری ۴ متر در ۳ متر است. یک اجاق گاز، یک سرخ‌کن، یک یخچال که در تابستان خراب می‌شود و آقای دلاوری یخ را از بقال سر کوچه می‌خرد. هیچ سیستم رایانه‌ای وجود ندارد. صورت‌حساب‌ها روی کاغذ نوشته می‌شود و آقای دلاوری جمع‌ها را در ذهن خود می‌زند. «ماشین‌حساب دارم، اما روشنش نمی‌کنم. چشمم بهتر از باتری است.»

بهداشت رستوران در سال ۱۳۹۱ و ۱۳۹۴ دو بار بازرسی شد و هر دو بار بدون تذکر گذشت. آقای دلاوری می‌گوید بازرس‌ها هم مشتری‌اند و می‌دانند چه می‌خورند. این را نه با افتخار می‌گوید و نه با گلایه. انگار دارد یک قانون فیزیک را می‌گوید. در همین محله، دو رستوران دیگر هم هست که آقای دلاوری غذایشان را می‌خورد و می‌گوید «آن یکی روغن زیاد می‌ریزد، این یکی نمک زیاد می‌گذارد، اما هر دو هنوز سرپا هستند».

آخرین صندلی، آخرین دلیل

«تا زمانی که مشتری بیاید، در باز است.» این جمله را آقای دلاوری در پاسخ به پرسش درباره‌ی زمان بازنشستگی می‌گوید. نه سال دارد و هنوز هر روز ساعت ۷ صبح می‌آید و ساعت ۶ بعدازظهر می‌رود. پسرش در خارج است و دخترش معلم است و هیچ کدام از آنها نمی‌خواهند رستوران را بگیرند. این هم یک واقعیت است که آقای دلاوری بدون تأسف می‌گوید.

رستوران دلاوری ۲۰ صندلی دارد. آخرین صندلی روی پله‌ی ورودی است و آقای دلاوری می‌گوید اگر کسی بیاید و بگوید جا ندارم، می‌گوید «صبر کن، یکی می‌رود». این جمله را نه برای مشتری، بلکه برای خودش می‌گوید. و تا الان همیشه یکی رفته است.

رستوران دلاوری در ورودی بازار بزرگ تهران، سه نسل است که همان منو، همان آشپز و همان صندلی آخر را نگه داشته است

صاحبش می‌گوید تا زمانی که مشتری بیاید، در باز است و هنوز هیچ تابلوی نئونی ندارد.

ᠬᠣᠯᠣᠨᠣᠭᠣᠨᠤ ᠨᠣᠮᠤᠨᠳᠤ ᠪᠣᠯᠤᠨᠠ᠂᠂

ᠬᠣᠯᠣᠨᠣᠭᠣᠨᠤ ᠳᠤᠷᠠᠳᠠᠨ ᠳᠤᠴᠠᠭᠠᠨ ᠳᠤᠷᠠᠯᠴᠠᠭᠠᠳᠤ ᠪᠣᠯᠤᠭᠰᠠᠨ ᠪᠣᠯᠤᠨ ᠳᠤᠴᠠᠭᠠᠨ ᠳᠤᠷᠠᠯᠴᠠᠭᠠᠳᠤ ᠬᠣᠯᠣᠨᠣᠭᠣᠨᠤ